स्कूल बागवानी

गाँधी के संदेश की संभाव्यता की तलाश

लौरा कोलुसी-ग्रे, एलेना कैमिनो और डोनाल्ड ग्रे

भाषान्तर : मधुलिका झा

परिचय

पर्यावरण संकट के कई पहलू जैसे 'जलवायु संकट', 'स्वास्थ्य संकट', 'आर्थिक संकट' आदि से हम सभी परिचित हैं। लेकिन इसका एक अप्रत्याशित परिणाम यह भी है कि बहुत से लोग अपने अंदर बेबसी, अपराध बोध और निराशा की भावना को लगातार बढ़ते हुए महसूस कर रहे हैं। कुछ लेखक बच्चों द्वारा अनुभव की गई 'पर्यावरण-अवसाद' (eco-anxiety) का विशेष तौर पर जिक्र करते हैं (होगेट एट अल., 2019), जो पर्यावरणीय आपदाओं से जीवित बच जाने या ऐसी आपदा के साक्षी होने, या दुनिया के वापस बेहतर हो पाने की उम्मीद के बहुत कम या खत्म हो जाने जैसी खबरों के संपर्क में आने के कारण बच्चों में देखी जा रही है।

मानव इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर, जब यह अनुमान लगाया गया कि 2020[1] के अंत तक चालीस से साठ मिलियन लोग अत्यधिक ग़रीबी ($1.90 प्रतिदिन से भी कम) के दायरे में शामिल हो चुके होंगे, हम इस सवाल से जूझ रहे हैं कि आज गाँधी के विचारों से जुड़ने का क्या मतलब है? 70 साल पहले उनकी मृत्यु के बाद से, दुनिया काफी बदल चुकी है; तकनीकी नवाचार की बढ़ती दर और समाज के हर स्तर पर होने वाले परिवर्तन- और शहरीकरण का विस्तार- यह परिदृश्य ग्रामीण विकास और कारीगर समाज की पुरानी संकल्पना से संगत नहीं दिखाई पड़ता। तब भी, गाँधी ने लोगों और पर्यावरण दोनों का शोषण करने वाली आर्थिक पद्धतियों के विनाशकारी प्रभावों के बारे में पूर्व चेतावनी दी थी। सैनफोर्ड (2013) के अनुसार, वर्ष 1946-47 के दौरान भारत में अनाज की कमी होने पर गाँधी ने लोगों से अपने उपयोग के लिए चावल का उत्पादन खुद शुरू करने का आग्रह किया था। गाँधी का विचार था कि भोजन के साथ आत्मीयता- जैसाकि अपने कपड़े खुद से बनाने पर भी होता है- व्यक्तिगत से लेकर सामुदायिक और राजनीतिक स्तर पर उन विकल्पों को काम में लेने की संभावनाएं पैदा करती है जो सामाजिक और पर्यावरण की दृष्टि से अधिक स्थायी है (सैनफोर्ड, 2013)। जैसा कि हम अभी देख रहे हैं, तब भी इस बात को स्वीकारा गया था कि उपभोक्तावादी दृष्टिकोण का प्रतिरोध और स्व-अनुशासन को काम में लेने की हमारी क्षमता ही स्थायी समाज के निर्माण की तरफ ले जा सकती है।

आज की जटिल और संघर्षपूर्ण दुनिया में रहने वाले नागरिकों के रूप में छात्रों को तैयार करने वाले शिक्षकों के तौर पर हमारा मानना है कि आत्मनिर्भरता और स्वायतत्ता के विकास के बारे में गाँधी के विचार शिक्षा के लिए एक प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं। ये हमें इस सीमा तक विचार करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं जहाँ हमारे शैक्षणिक प्रयास नए दृष्टिकोण के निर्माण और क्रियान्वयन दोनों के लिए एक मंच का काम कर सकेंगे।

1. विश्व बैंक द्वारा दिए आँकड़े (https://www.worldbank.org/en/topic/poverty/overview), 12 अप्रैल, 2020 को अपडेट किए गए थे।

गाँधीवादी विचार के साथ हमारे अनुभव

गाँधी के विकास के दर्शन के साथ हमारा जुड़ाव नब्बे के दशक की शुरुआत में उन महत्वपूर्ण अनुभवों की बदौलत हुआ था जब हमें तमिलनाडु के दो गाँधीवादी समूहों के साथ जुड़ने का अवसर मिला। हमारा एक अनुभव एसोसिएशन फॉर सर्व सेवा फॉर्म्स (ASSEFA), जो एक आंदोलन होने के साथ ही एक गैर-सरकारी संगठन भी था, के साथ विकसित साझेदारी से निकला था। यह आंदोलन गाँधी की भारत को आत्मनिर्भर गाँवों के समुदाय के रूप में देखने वाली संकल्पना से प्रेरित था। ASSEFA का जन्म बीसवीं शताब्दी के अस्सी के दशक में अनुपजाऊ और बंजर भूमि को विकसित करने में भूमिहीन किसानों की सहायता करने, और पचास के दशक में आचार्य विनोबा भावे द्वारा भूदान में एकत्रित भूमि[2] को कृषि के काम में लेने के उद्देश्य से हुआ था। धीरे-धीरे ASSEFA ने समुदाय को सहयोग देने के लिए अपने मूल दृष्टिकोण में बदलाव किया और समन्वित कार्यक्रमों की एक शृंखला के साथ इसका विस्तार खाद्य उत्पादन, व्यापार और शिक्षक शिक्षा तक हो गया। हालाँकि, अब भी यह स्वतंत्रता, आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित स्वावलंबी, आत्मनिर्भर और स्व-शासित समुदाय की स्थापना के गाँधी के दृष्टिकोण को मार्गदर्शक सिद्धान्त[3] मानकर काम करता है। ASSEFA आज भी काफी सक्रिय हैं, लेकिन यह आर्थिक वैश्वीकरण के विनाशकारी प्रभावों के साथ-साथ वर्तमान भारत सरकार की नवउदारवादी राजनीति से भी जूझ रहा है।

दूसरा अनुभव हम में से कुछ लोगों (कोलूकी और कैमिनो) के वर्ष 1998-2000 के बीच हुए अहिंसात्मक आंदोलन में शामिल होने से जुड़ा हुआ है- तमिलनाडु के समुद्री तट पर सघन झींगा पालन के नए स्थापित उद्योग के कारण हो रही पर्यावरण की हानि के खिलाफ यह अहिंसक संघर्ष गरीब मछुआरों और भूमिहीनों के एक छोटे समूह द्वारा किया गया था। निर्यात के लिए खाद्य उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य को बढ़ावा देने वाली अंतर्राष्ट्रीय कृषि नीतियों के सहयोग से, तटीय मैंग्रोव जंगलों की जगह पर झींगा पालन के खेत तैयार किए गए। नए उद्योग की स्थापना ने कृषि कार्यों के लिए ताजे भूजल के स्तर को घटाया, और झींगों के लिए औद्योगिक रूप से तैयार भोजन और दवाईयों के अपशिष्टों और प्रदूषकों के स्थानीय जल प्रणालियों में निस्तारण ने प्रदूषण की समस्या को बढ़ाया (गोविंदराजन, 2017 पृ. 1)। अस्सी वर्षीय गाँधीवादी कार्यकर्ता जगन्नाथन के नेतृत्व में संचालित इस अहिंसक विरोध ने भारत के सर्वोच्च न्यायालय का ध्यान आकर्षित किया, जिसने 1994 में तट से 500 मीटर के भीतर झींगों की खेती को बंद करने का आदेश दिया।

गाँधी, अनसुने अग्रदूत

आज तक, झींगा पालन अपने पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों के कारण विवादास्पद बना हुआ है (नारायण, 2014) और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के द्वारा हो रहे पर्यावरणीय संसाधनों के दुरुपयोग के खिलाफ स्थानीय लोगों के विरोध प्रदर्शन की संख्या में इजाफा हो रहा है (ह्वाइट, 2016)। अनियंत्रित शहरीकरण, उपजाऊ भूमि का आकस्मिक ह्रास और बढ़ती सामाजिक असमानताएं इस बात की साक्षी हैं जिसका अनुमान गाँधीजी ने लगाया था; ऐसी आर्थिक प्रणाली के परिणाम विनाशकारी होंगे, जिसमें मानव कल्याण और पृथ्वी के बीच के संबंधों की अंतरनिर्भरता का ध्यान नहीं रखा गया। सामाजिक-पर्यावरणीय विवाद के साथ जुड़ने और झींगा पालन के खिलाफ हो रहे संघर्ष की अहिंसक प्रकृति ने हमें शिक्षा को लेकर गाँधी के विचारों के निहितार्थ को समझने के लिए प्रोत्साहित किया। जिसमें ख़ासकर विज्ञान, शिक्षा और पर्यावरण के बीच के महत्वपूर्ण संबंधों का विश्लेषण शामिल था।

हिंदू परंपरा में अहिंसा को किसी भी प्राणी के प्रति हिंसा ना करने के रूप में देखा जाता है। अहिंसा केवल मनोवैज्ञानिक या शारीरिक हिंसा के सभी रूपों का परित्याग नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण है जो जीवन के सभी रूपों में परमात्मा की उपस्थिति को स्वीकारने से उपजता है। अहिंसा सभी प्राणियों के लिए सम्मान की माँग

---

2. 'भूदान' में दी गई भूमि संपन्न जमींदारों द्वारा भूमिहीन लोगों को खेती करने के उद्देश्य से दान दी गई थी।
3. Assefa India Report 2019/2020. SOCIAL SOLIDARITY ECONOMY: THE GANDHIAN PATH

करती है और आत्म-अनुशासन और आत्म-बलिदान के कार्य में सत्य और आत्म-परिवर्तन का अवसर निहित है। गाँधी ने राजनीतिक क्षेत्र में अहिंसा का विस्तार सत्याग्रह के रूप में किया- जो उत्पीड़क के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध था- जो ताकत की बराबरी पर आधारित है, और जिसका उद्देश्य दोनों पक्षों के बीच के संबंधों की प्रकृति में परिवर्तन लाना है, ताकि दोनों का हित (सर्वोदय) हो सके। इनके आधार पर, हमारा चिंतन ख़ास तौर से 'शक्तिशाली' ज्ञान की प्रकृति और उद्देश्य की समस्याओं को उजागर करना था - जैसे स्कूलों में विज्ञान-शिक्षा पाठ्यक्रम के अंतर्गत सिखाई जा रही ऐसी अवधारणाओं और विचारों को चिह्नित करना जिनका उद्देश्य भविष्य के मज़दूर और इस पृथ्वी के वासी के रूप में युवा नागरिकों का निर्माण करना है (कोलूकी-ग्रे और कैमिनो, 2016)। हमने इस बात पर विचार किया कि कैसे एक तरफ़ इस तरह के विशिष्ट ज्ञान प्राकृतिक दुनिया के बारे में विस्तृत और मात्रात्मक जानकारी प्रदान करते हैं, जैसे कि झींगे के जीव विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान, उनके विकास की दर, उनके उत्पादन के लिए 'अनुकूलतम' जलवायु परिस्थितियों आदि की जानकारी; और दूसरी तरफ़ इसने ऐसी विनाशकारी कृषि पद्धतियों में भी मदद की है जिन्होंने मानव को अपने भोजन के स्रोत से ठीक उसी तरह दूर कर दिया है जैसे उन्होंने आजीविका के लिए अपने पर्यावरण पर निर्भर स्थानीय लोगों के ज्ञान और अनुभवों को हाशिए पर डाल दिया था।

यह भी उल्लेखनीय है कि वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से, 'नए विज्ञान' के आह्वान में यह शामिल है कि वह बायोस्फीयर में अपनी 'जगह' के बारे में अधिक जागरूक और सचेत हो जो सहभागितापूर्ण और संवादात्मक हो, साथ ही साथ एक 'धीमा' विज्ञान हो जिसे डर ना लगता हो ''...मंद गति से चलने और ऐसे सवालों पर समय ख़राब करने से जिनका सीधे-सीधे तात्कालिक परिस्तिथियों और विषय-क्षेत्र की प्रगति से कोई सरोकार ना हो'' (स्टेनजर्स 2017, पृ. 1)। यह नजरिया 'तीव्र विज्ञान' के विपरीत है, वो 'तीव्र विज्ञान' जो प्रभावी ज्ञान के संचय को बढ़ावा देने, एक ही लीक पर चलने और न केवल विषयों के बीच के, बल्कि औपचारिक और अनौपचारिक ज्ञान और सीखने और अनुभव के बीच संबंध को नकारता है। गाँधी की अंतर्दृष्टि और अहिंसा, सत्याग्रह और सर्वोदय के बारे में उनके विचारों का अनुसरण करने के बाद, हमारे शैक्षिक प्रश्न प्रभावशाली ज्ञान को बेहतर तरीके से बच्चों तक स्थानांतरित करने की बजाय इस दिशा में मुड़ गए थे कि दुनिया को समझने और इसमें रहने की प्रक्रिया में हम किस सीमा तक बदलाव ला सकते हैं और इस प्रकार हम रचनात्मक और समालोचनात्मक जाँच-पड़ताल की प्रक्रिया में वे शैक्षिक तरीके और अनुभव कैसे विकसित कर सकते हैं जहाँ ज्ञान परिस्थिति और लोगों के जीवन से जुड़ा हुआ हो?

चित्र 1 : स्कूल का उद्यान

बच्चों की शिक्षा को लेकर गाँधीवादी दृष्टिकोण

इन सवालों और हमारे रोज़मर्रा के सीखने के तरीकों में अहिंसा के स्थान ने हमें विज्ञान शिक्षा के उद्देश्यों और साथ ही इसके तरीकों के बारे में मूलभूत मान्यताओं पर सवाल करने के लिए प्रेरित किया। लगभग 50 वर्षों से, जब से औद्योगिक पैमाने पर झींगा पालन की शुरुआत हुई, हम अभी भी खाद्य और गरीबी की समस्या से जूझ रहे हैं, जिसे अब 13 सतत विकास लक्ष्यों में से प्रमुख लक्ष्य के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इस पूरे परिदृश्य ने अपने स्कूलों के बगीचे में प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों द्वारा अपना भोजन उगाने की

पायलट पहल में हमारी भागीदारी के लिए संदर्भ प्रदान किया (ग्रे, कोलूकी-ग्रे एट अल., 2019)। स्कॉटलैंड के एबरडीन शहर की परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त इस परियोजना को विश्वविद्यालय के कर्मचारियों, आर्थिक सुधार वाले क्षेत्रों के 3 प्राथमिक स्कूलों और सामुदायिक खेती को बढ़ावा देने वाले स्थानीय स्वैच्छिक संगठन 'वन सीड फॉरवर्ड' के बीच एक साझेदारी के रूप में स्थापित किया गया था। देखा जाए तो यह विचार नया नहीं था क्योंकि कृषि साक्षरता स्कूलों में पुनरुद्धार के दौर से गुजर रही है; 'बागवानी को अब बच्चों की भोजन की खाद्य चेतना बढ़ाने और ताजा भोजन के साथ बच्चों के रिश्तों को फिर से जीवंत करने के लिए बुनियादी प्रभाव में से एक के रूप में देखा जाता है' (ग्रीन और दुहन, 2015, पृ. 2)।

चित्र 2 : 'स्पर्श'

फिर भी, गाँधी और उनके अनुयायियों द्वारा आत्म-निर्भरता (स्वराज) का समर्थन करने के संघर्ष के लिए शुरू किए गए प्रदर्शन की तरह ही, हमारी परियोजना भी ना केवल भोजन उत्पादन के प्राथमिक स्रोत के तौर पर बल्कि शिक्षा और सीखने के लिए भी भूमि को पुनः प्राप्त करने के आग्रह के साथ शुरू हुई। वस्तुतः खाँचों में विभाजित पाठ्यक्रम के ढाँचे को दरकिनार करते हुए, परियोजना ने मिट्टी, जलवायु, मौसम और प्रकृति के साथ प्रत्यक्ष अनुभव की अहमियत को पुनः तलाशने की कोशिश की। यह हमारी परियोजना में एक महत्वपूर्ण मोड़ था क्योंकि इसने पाठ्यक्रम को देखने की एक अलग दृष्टि दे दी थी। पाठ्यक्रम वह नहीं है जो लिखित, दिया गया या निर्धारित है बल्कि यह उस वातावरण, जिसमें हम रहते हैं और जिस पर निर्भर हैं, के साथ अनुभव के दौरान 'निर्मित' होता है। हमने बच्चों और उनके शिक्षकों के साथ स्कूल के बगीचों को विकसित करने के लिए काम किया। हमने मिलकर तय किया कि कौनसी सब्ज़ियाँ उगानी हैं और कक्षा-कक्ष और बगीचे में होने वाली गतिविधियों के लिए सामग्री विकसित की हैः

''(हमने सीखा)... कि पौधों को सावधानीपूर्वक कैसे लगाया जाए। ऐसा नहीं कि एक गड्ढा है और जिसमें पौधे को घुसा दिया। आप इसे अच्छी तरह से और सावधानी से करते हैं।'' (बच्चा, उम्र 9)

विनोबा भावे ने शिक्षा के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि, ''ज्ञान-प्राप्ति के लिए इंद्रियों का प्रशिक्षण पहला और महत्वपूर्ण कदम है'' (1985, पृ. 35)। इन्द्रियों की शिक्षा से बच्चों को उस पर्यावरण से पहले सीधी प्रतिक्रिया प्राप्त होती है जिसमें वे रहते हैं; वे इस बारे में जानना सीखते हैं कि उन्हें किससे सुरक्षा और पोषण मिलता है; उनका अस्तित्व किस पर निर्भर करता है।

इस तरह अनुभव करना पृथ्वी पर अपने जीवन की परिस्थितियों को समझने के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है जिसमें धैर्य और सावधानी से अवलोकन करने के साथ ही घटनाओं के बीच के संबंधों को भी ध्यान में रखना शामिल है, जो एक तरह से वैज्ञानिक ज्ञान के नैतिक पक्ष को समृद्ध करता है (ब्रूक्स, 1998)। ये विचार संज्ञान की समकालीन समझ के बेहद अनुरूप हैं, गैलगर और लिंडग्रेन (2015) के अनुसार संज्ञान का अर्जन केवल एक मस्तिष्क में होने वाली घटना नहीं है, बल्कि यह मस्तिष्क-शरीर-पर्यावरण की अंतःक्रियाओं के माध्यम से उत्पन्न और विकसित होता है। हाथ और स्पर्श का उपयोग करके समझना (चित्र 2) अपने पर्यावरण की जानकारी और समझ दोनों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्पर्श प्रभाव डालने वाली पहली इंद्रिया होती हैं जिसके माध्यम से हम मानव के रूप में अपने आस-पास की दुनिया को महसूस करने और समझने में कुशल हो जाते हैं। स्पर्श के माध्यम से हम पदार्थ के प्रतिरोध को महसूस कर सकते हैं; पैरों तले जमीन को; भोजन की संरचना को महसूस कर सकते हैं, ऐसे तरीके जो अपने वातावरण के साथ 'सामंजस्य' और 'सह-सृजन' की भावना को मज़बूत करते हैं। और गाँधी ने यही बात

दोहराई थी; ''हमारी शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन की ज़रूरत है। हाथ के माध्यम से मस्तिष्क को शिक्षित किया जाना चाहिए (...)। (हरिजन, 18-2 '39, पृ. 14-15, जोशी में उद्धृत, 2002)।

उद्यान परियोजना ने हमें शिक्षा के बारे में गाँधी के क्रांतिकारी संदेश पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया। मानकीकृत आकलनों के माध्यम से संचालित होने वाली अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा की वर्तमान व्यवस्था एक ऐसी प्रणाली है जो बहिष्कार करने और सामाजिक विभाजनों के पुराने तरीकों को मजबूत करते हुए इन्हें बढ़ावा देती है। ऐसे में स्कूल के बगीचों को सुधारात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है, और इसे उन विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त मान लिए जाने का ख़तरा है जो पर्याप्त अकादमिक नहीं हैं। इस दृष्टि से यह वैचारिक और शारीरिक गतिविधियों को अलग करके देखने वाले कार्टेशियन विभाजन को मज़बूत करती है। इसके विपरीत, गाँधी के मस्तिष्क, हृदय और हाथ के दर्शन को यदि अपनाएं तो यह इन बगीचों एक तरह से पुनर्जीवित करता है, इन्हें नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर देता है और बुनियादी शिक्षा देने के लिए इन्हें एक संदर्भ की तरह पेश करता है; अंत्योदय (सबसे कमजोर का उत्थान), स्वराज (स्व-शासन) और श्रमदान (श्रम का उपहार)।

आगे के विचार

यह स्पष्ट है कि गाँधी की दृष्टि में शिक्षा आम लोगों की भीड़ में से कुछ उत्कृष्ट लोगों को आगे बढ़ाने के लिए नहीं थी। शारीरिक श्रम को शैक्षिक अभ्यास में शामिल किया जाना था, ताकि विशेषज्ञों के तौर पर वैज्ञानिकों और आम लोगों के बीच ज्ञान का कोई पदानुक्रम न बन जाए (प्रसाद, 2001)। ऐसे फर्क को पहचानना ही शिक्षा के लिए चुनौती है। यह शिक्षकों के रूप में अपने विद्यार्थियों के साथ मिलकर सीखने और धरती से सीखने की क्षमता पर सवाल खड़े करता है; स्वयं के बारे में भी उतनी ही जानकारी होने पर ध्यान देना जितना पाठ्यक्रम का ज्ञान है। जैसा कि विनोबा भावे ने माना है कि यदि भौतिक नियमों के ज्ञान (विज्ञान) को स्वयं के ज्ञान (आत्म ज्ञान) के साथ जोड़ा जाता है तो इस स्थिति में शिल्प के माध्यम से शिक्षा एक अच्छा प्रारंभिक बिंदु साबित हो सकती है - तब सर्वोदय के लक्ष्य (सभी के लिए कल्याण) को हासिल किया जा सकता है (हार्ट, 1992)। उद्यान परियोजना ने नवउदारवादी ताकतों का विरोध किया, जो शिक्षा को पूंजीवादी शोषण की कमियों को दूर करने के तरीके के तौर पर देखती है। बच्चों को सामुदायिक भागीदारी के केंद्र में रखते हुए, उद्यान परियोजना साझे अनुभव से सीखने की दिशा में एक प्रयोग था, जो नए विचारों और रचनात्मक प्रतिरोध के नए रूपों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलता है। ◆

लौरा कोलुसी-ग्रे : मोरे हाउस स्कूल ऑफ एडुकेशन एंड स्पोर्ट, द युनिवर्सिटी ऑफ एडिनबर्ग (यूके)
संपर्क : Laura.Colucci-Gray@ed.ac.uk

एलेना कैमिनो : सेंट्रो स्टडी सेरेनो रेजिस, ट्यूरिन, इटली
संपर्क : elenacamino1946@gmail.com

डोनाल्ड ग्रे : स्कूल ऑफ एडुकेशन, युनिवर्सिटी ऑफ एबरडीन, यूके
संपर्क : d.s.gray@abdn.ac.uk

(उपरोक्त तीनों ही लेखक अपने वर्तमान संस्थान के साथ-साथ इंटर-युनिवर्सिटी रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑन सस्टेनेबिलिटी (आईआरआईएस), युनिवर्सिटी ऑफ ट्यूरिन, इटली से भी जुड़े हुए हैं।)

संदर्भ

भावे, वी. (1985): विनोबा: *थौट्स ऑन एडुकेशन*, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

ब्रूक्स, आई. (1998): गोथियन साइन्स एज ए वे टू रियल लैंडस्केप. लैंडस्केप रिसर्च, 53 (1), पेज 51-69।

कोलूकी-ग्रे, एल., कैमिनो, ई. (2016): लुकिंग बैक एंड मूविंग साइडवेज़: फॉलोइंग द गांधीयन एप्रोच एस द अंडरलाईंग थ्रेड फॉर ए सस्टेनेबल साइन्स एंड एडुकेशन. विजन फॉर सस्टेनेबिलिटी, 6 : 23-44

गैलेगर, एस., लिंडग्रेन, आर. (2015): इनएक्टिव मेटाफर्सः लर्निंग थ्रू फुल-बॉडी एंगेजमेंट. एडुक साइकोल रेव, 27, 391 404. https://doi.org/10.1007/s10648-015-9327-1

ग्रीन, एम. एंड डून, आई. (2015): द फोर्स ऑफ गार्डनिंगः इनवेस्टिगेटिंग चिल्ड्रेन्स लर्निंग इन ए फूड गार्डन. *ऑस्ट्रेलियन जर्नल एन. एडुकेशन,* oi: 10.1017 / aee.2014.45

गोविंदराजन, वी.(2017): शृम्प फॉर्मिंग इज ब्लूमिंग इन तमिलनाडु - बट इट इज कॉजिंग वॉटर एंड सॉइल पोल्यूशन. उपलब्ध हैः

https://scroll-in/article/836294/shrimp-farming-is-booming-in-tamil-nadu-but-the-cost-is-water-and-soil-contamination)

ग्रे, डी., कोलूकी-ग्रे, एल., डोनाल्ड, आर., किरियाकौ, ए., एंड वोडा, डी. (2019): फ्रोम ऑइल टू सॉइल. लर्निंग फ्रोम सस्टेनेबिलिटी एंड ट्रांजिशन विथइन द स्कूल गार्डेनः ए प्रोजेक्ट ऑफ कल्चरल एंड सोश्लरी-लर्निंग. स्कॉटिश एडुकेशनल रेव्यू, 51(1), 57-70.

हार्ट, आर.ए.(1992): चिल्ड्रेन्स पार्टीसिपेशन फ्रोम टोकनिज्म टू सिटीजनशिप. इनोसेंट एसेस (वॉल. 4). https://doi.org/88-85401-05-8)

होगेट, पी. (2019): जलवायु मनोविज्ञान. आपदा के प्रति उदासीनता पर. लंदनः पालग्रेव मैकमिलन।

जोशी, डी. (2002): गाँधीजी ऑन विलेजेस. मुंबईः मेघश्याम टी.अजगांवकर, एक्सीक्यूटिव सेक्रेटरी मणि भवन गाँधी संग्रहालय. उपलब्ध हैः

http://www.gandhiashramsevagram.org/gandhi-on-villages/chapter-07-education-for-villages.php

कुमार, आर. (2002): थियरि एंड प्रैक्टिस ऑफ गाँधीयन नॉन-वायोलेंस. नई दिल्लीः मित्तल पब्लिकेशन्स.

नारायण, एस. (2014): हाउ थाईलैंड्स डाईंग शृम्प आर किलिंग एन इंडियन विलेज. नोवा साइंस, उपलब्ध हैः

https://www.pbs.org/wgbh/nova/article/shrimp-pokkali/

प्रसाद, एस.(2001): टूवर्ड्स एन अंडरस्टैंडिंग ऑफ गाँधी'स व्यूज ऑन साइन्स. इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली, 36 (39), पीपी. 3721-3732.

सैनफोर्ड, ए.डब्ल्यू. (2013): गाँधी'स एग्रेरियन लीगेसीः प्रेक्टिसिंग फूड, जस्टिस, एंड सस्टेनिबिलिटी इन इंडिया. जेएसआरएनसी, 7 (1), पेज 65-87. doi: 10.1558/jsrnc.v7i1.65

स्टेंजर्स, आई (2017): अनदर साइन्स इज पॉसिबलः ए मेनिफेस्टो फॉर स्लो साइंस. लंदनः पॉलिटी प्रेस.

व्हाईट, के. पी. (2016): इंडीजीनस एनवायरनमेंटल मूवमेंट्स एंड द फंक्शन ऑफ गवर्नेंस इन्स्टीट्यूशन्स. द ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ एनवायरनमेंटल पोलिटिकल थियरि; जनवरी. 2016. DOI: 10.1093 / ऑक्सफोर्ड/9780199685271.013.31